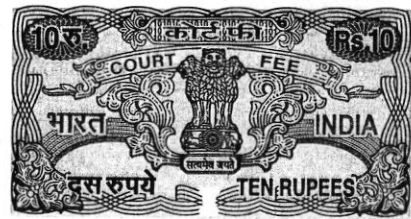


16



न्यायालय माननीय राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश, ग्वालियर

प्रकरण क्रमांक:-

R 017

III | विविधा / क्रि.स. / भू.रा. / 2017 / 3662

सस. के कार्यालय, ग्वा.  
4-10-17

~~500~~  
4-10-17

~~अ.प्र.म.स.~~  
8/9/16

वृजकिशोर पुत्र राममरौसे लाल,  
निवासी- ग्राम कोणण, तेहसील-अंर,  
जिला मिण्ड-मध्यप्रदेश । ----- प्रार्थी  
बिराघद

प्रेम कुमार तिवारी पुत्र  
निवासी ग्राम कोणण, तेहसील अंर,  
जिला मिण्ड-मध्यप्रदेश । ----- प्रतिप्रार्थी

प्रार्थना -पत्र अन्तर्गत धारा 142 सी०पी०सी० सहपठित धारा 32 मध्यप्रदेश  
मू-राजस्व संहिता 1848 बावत् अपील प्रकरण के क्रमांक 1234-तीन। 10 द्वाद मै  
पारित अंतिम आदेश दिनांक 06-06-2016 मै लिपकीय मूल सुधार हेतु ।

श्रीमान् जी,

लिपकीय मूल सुधार हेतु आवेदन पत्र निम्नानुसार प्रस्तुत है :-

- 1- यह कि, उपरोक्त अपील प्रकरण मै अंतिम आदेश दिनांक 06-06-16 को पारित किया गया है ।
- 2- यह कि, अंतिम आदेश के पृष्ठ क्रमांक 2 लगायत 8 मै प्रकरण क्रमांक 1234-तीन। 06 अपील के स्थान पर 1234-दो। 06 लिपकीय संव टंकण मूल से टाईप हो गया है, जिसे न्याय हित मै कुछ सुधार किया जाना न्यायोचित है ।

अस्तु यह आवेदन पत्र प्रस्तुत कर निवेदन है कि न्याय हित मै उपरोक्तानुसार अपील प्रकरण मै पारित अंतिम आदेश दिनांक 06-06-16 मै लिपकीय मूल सुधार बावत् आदेश प्रदान किये जाने की कृपा की जावे ।

इति दिनांक:- 8-10-2017

प्रार्थी,

वृजकिशोर ----- प्रार्थी

द्वारा अभिभाषक

~~अ.प्र.म.स.~~

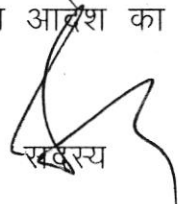
4-12-10-17

✓

न्यायालय, राजस्व मण्डल, म० प्र०, ग्वालियर  
अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

भाग-अ

प्रकरण क्रमांक विविध/भिण्ड/भूरा/2017/3662

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही अथवा आदेश	पक्षकों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
03/07 -18	<p>आवेदक के अधिवक्ता श्री एस० के० अवस्थी उपस्थित होकर आवेदन पत्र अन्तर्गत धारा 32 म० प्र० भू-राजस्व संहिता 1959 भूल सुधार बावत प्रस्तुत किया जाकर अनुरोध किया गया है कि प्रकरण क्रमांक अपील 1839-तीन/06 में पारित आदेश दिनांक 6.6.16 में लिपिकीय भूल से प्रकरण क्रमांक अपील 1838-तीन/06 टाइप हो गया है। अंतिम आदेश के पृष्ठ 2 लगायत 4 में प्रकरण क्रमांक अपील 1838-तीन/06 के स्थान पर प्रकरण क्रमांक अपील 1839-तीन/06 किये जाने का अनुरोध किया गया है।</p> <p>2-आवेदक अधिवक्ता का अनुरोध स्वीकार किया जाता है तथा अंतिम आदेश के पृष्ठ 2 लगायत 4 में प्रकरण क्रमांक अपील 1838-तीन/06 के स्थान पर प्रकरण क्रमांक अपील 1839-तीन/06 पढ़ा जावे। यह आदेश पत्रिका आदेश का मूल अंग मानी जावेगी।</p>	<p style="text-align: right;"> रजवस्य</p>